सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वी एवेंन्यू ,आई.पी.एक्सटेंशन,

पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: २०२६-२७

कक्षा:-7	**विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक**	**पाठ:7 दो गौरैयाँ**

मौखिक प्रश्न

उ०१) किचन वाले दरवाज़े से बाहर निकालने पर चिड़िया दरवाज़े के नीचे से आ गई थी क्योंकि दरवाजे के नीचे थोड़ी-थोड़ी जगह खाली थी।

उ०२) चिड़ियों के इस रास्ते को बंद करने के लिए दरवाज़ों के नीचे कपड़े ठूँस दिए गए ताकि कहीं कोई जगह बची ना रह जाए।

उ०३) दरवाज़ों के नीचे कपड़े ठूँस दिए जाने पर भी चिड़िया थोड़ी देर में फिर से कमरे में मौजूद थी अबकी बार वे रोशनदान से आ गई थी, क्योंकि रोशनदान का एक शीशा टूटा हुआ था।

उ४) घोसलों में चिड़िया के बच्चों को देखकर पिताजी स्टूल पर से नीचे उतर आए और घोसलों के तिनकों में से लाठी निकालकर उन्होंने लाठी को एक और रख दिया। इस बीच माँ भी कुर्सी पर से उठीं और उन्होंने सभी दरवाजे खोल दिए। दरवाज़ा खुलते ही नन्ही चिड़ियों के माँ-बाप झट से उड़कर अंदर आ गए और चीं-चीं करते उनसे जा मिले।

लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

क)लेखक के घर में तरह-तरह के पशु पक्षी थे। लेखक के पिताजी घर का मालिक उन पशु- पक्षियों को ही मानते थे। वह कहते थे हम तो यहाँ मेहमान है घर के मालिक तो कोई दूसरे ही हैं।

ख) लेखक के घर में बीसियों चूहे हैं। वे रात भर एक कमरे से दूसरे कमरे में भागते फिरते हैं धमा चौकड़ी मचाते हैं। इसी तरह एक बिल्ली भी है, जो उनके घर के अंदर जाकर दूध भी पी जाती है।

ग) गौरैयौं को घर से बाहर निकालने के लिए पहले तो पिताजी ने जोर से ताली बजाई, मुँह से 'शू....शू' कहकर बाहर निकालने की कोशिश की।

घ) जब पिताजी चिड़ियों को घर से बाहर नहीं कर पाए, तब उन्होंने घोंसला नोंचकर घर से बाहर निकालने का निर्णय लिया। घोंसला तोड़ने के लिए पिताजी ने लाठी का सिरा सूखी घास के तिनकों पर जमाया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर (केवल ख और घ कॉपी में करें)

क)लेखक के घर में अनेक प्रकार के पशु-पक्षियों ने डेरा डाला हुआ था और वह उसे अपना घर समझ कर रह रहे थे। इसलिए लेखक के पिताजी को यह लगता था कि यह घर तो इन पशु-पक्षियों के लिए ही बना हुआ है। हम तो सिर्फ़ मेहमान की तरह हैं। घर के मालिक तो वास्तव में यह पशु-पक्षी ही हैं।

ख) हम पिताजी की इस बात से पूरी तरह सहमत हैं, क्योंकि कहा जाता है कि 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी' अर्थात् जब किसी का घर ही टूट जाएगा तो फिर वह रहेगा कहाँ? इसलिए यदि किसी को वास्तव में घर से बाहर निकलना हो तो उसका घर तोड़ दो, जब घर टूट जाएगा तो फिर वह स्वतः ही वहाँ से चला जाएगा।

ग) पाठ का शीर्षक दो गौरैयाँ इसलिए रखा गया है, क्योंकि पूरी कहानी के केंद्र में दो गौरैयाँ है, जो लेखक के घर में आकर रहने लगी हैं और लेखक के पिताजी उन्हें घर से बाहर निकालने के लिए तरह-तरह के प्रयत्न करते रहते हैं। यदि हम

इस पाठ को एक नया शीर्षक देना चाहेंगे तो इसे नया शीर्षक देंगे 'किसका घर'? क्योंकि यहाँ लेखक के पिता को समझ नहीं आता कि घर उनका है या गौरैयों का है। उन्हें लगता है कि हम तो इस घर में मेहमान हैं, असली घर तो इन्हीं लोगों का अर्थात पशु-पक्षियों का ही है।

घ) हमारी दृष्टि में कहानी के मुख्य पात्र गौरैया हैं ,क्योंकि पिताजी भी अंत में गौरैयों से हार मान लेते हैं और उन्हें रहने का स्थान दे देते हैं। यह कहानी भी पूरी तरह गौरयों के इर्द-गिर्द ही घूमती है। इसलिए हम कह सकते हैं की कहानी के मुख्य पात्र गौरैयाँ ही है।